पाठ-3

भाववाचक संज्ञा—निर्माण

हिंदी भाषा अपने समृद्ध शब्द भंडार के कारण अत्यंत विकसित भाषा है। विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के लिए तथा हिंदी भाषा में प्रवीणता के लिए भाववाचक संज्ञा निर्माण व विशेषण निर्माण का ज्ञान अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त पर्यायवाची, समरूपी भिन्नार्थक, अनेकार्थक, विलोम, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का भी शब्द भंडार बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान है। अत: विद्यार्थियों को इनका समुचित ज्ञान दिया जा रहा है। इस पाठ में भाववाचक संज्ञा निर्माण पर विचार किया जा रहा है।

'क' भाग	'ख' भाग
(i) वह बहुत अच्छा **नेता** है।	वह बहुत अच्छा **नेतृत्व** करता है।
(ii) मैं **अपने** मित्र के घर गया।	मेरे मित्र ने मेरे साथ **अपनापन** दिखाया।
(iii) वह सभा में **खामोश** रहा।	सभा में उसकी **खामोशी** सब कुछ कह गयी।
(iv) वह सुंदर **लिखता** है।	उसकी **लिखाई** बहुत सुंदर है।
(v) चलो, काम **शीघ्र** करो।	उसने काम बड़ी **शीघ्रता** से कर दिया।

अब देखते हैं कि भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण कैसे होता है : उपर्युक्त पहले वाक्य में 'नेता' जातिवाचक संज्ञा शब्द है किन्तु भाववाचक संज्ञा बनाते समय 'नेता' शब्द के मूल शब्द को प्रयोग में लाना पड़ता है।

'नेता' शब्द संस्कृत के मूल शब्द 'नेतृ' (ले जाने वाला) की प्रथमा विभक्ति का एकवचन शब्द रूप है।

इसी 'नेतृ' मूल शब्द में 'त्व' प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनती है। अत:

नेतृ (ऋकारान्त पुल्लिंग मूल शब्द)

↓

नेतृत्व (मूल शब्द में 'त्व' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा निर्माण)

इसी प्रकार संस्कृत के मूल शब्दों मातृ (माता), पितृ (पिता) तथा भ्रातृ (भ्राता) जातिवाचक

संज्ञा शब्दों में 'त्व' प्रत्यय लगाकर क्रमशः 'मातृत्व', 'पितृत्व' एवं 'भ्रातृत्व' भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होगा।

दूसरे वाक्य में 'अपना' सर्वनाम शब्द के अंत में 'पन' प्रत्यय लगाने से 'अपनापन' भाववाचक संज्ञा का निर्माण हुआ है।

अपना (सर्वनाम)

↓

अपनापन ('पन' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा निर्माण)

विशेष : इसी प्रकार '**बाल**' (जातिवाचक संज्ञा) से '**बालपन**' भाववाचक संज्ञा बनेगी। किन्तु कई बार 'पन' प्रत्यय लगाने के साथ-साथ कुछ अन्य परिवर्तनों से भाववाचक संज्ञा बनती है। जैसे-

लड़का

↓

लड़क (अंतिम दीर्घ स्वर 'आ' को ह्रस्व 'अ' अर्थात 'का' को 'क')

↓

लड़कपन (पन प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा निर्माण)

अन्य उदाहरण

बच्चा

↓

बचा ('च्' का लोप)

↓

बच (अंतिम दीर्घ स्वर 'आ' को ह्रस्व 'अ' अर्थात 'चा' को 'च')

↓

बचपन ('पन' प्रत्यय से भाववाचक संज्ञा निर्माण)

तीसरे वाक्य में प्रयुक्त 'खामोश' अकारान्त विशेषण शब्द के अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'ई' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा शब्द बना- खामोशी। अर्थात

खामोश

↓

खामोश् (अंतिम स्वर 'अ' का लोप)

↓

खामोशी ('ई' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा शब्द बना)

चौथे वाक्य में प्रयुक्त 'लिखना' क्रिया शब्द के अंत में लगे 'ना' को हटाने के बाद बचे हुए शब्द के अंतिम स्वर (अ) के स्थान पर 'आई' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा बनी- 'लिखाई'। अर्थात –

लिखना

↓

लिख ('ना' को हटाया गया)

↓

लिख् (अंतिम स्वर 'अ' का लोप)

↓

लिखाई ('आई' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा शब्द बना)

पाँचवें वाक्य में 'शीघ्र' अव्यय शब्द में 'ता' प्रत्यय लगा देने से 'शीघ्रता' भाववाचक संज्ञा शब्द बना। अर्थात

शीघ्र

↓

शीघ्रता ('ता' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा शब्द बना)

हिंदी में कुछ शब्द तो मूल रूप से भाववाचक संज्ञा ही होते हैं। जैसे-प्रेम, घृणा, सुख, दुःख, क्रोध, जन्म, मरण, दया, ईर्ष्या, भय, सत्य, आदि। भाववाचक संज्ञा-निर्माण के कोई विशेष नियम तो नहीं हैं किन्तु **जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में 'त्व', 'पन', 'ई', 'आई', 'ता' आदि प्रत्यय लगाने से तथा कुछ अन्य परिवर्तनों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं।**

(क) जातिवाचक संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा-निर्माण

(i) कुछ जातिवाचक अकारान्त, आकारान्त, ईकारान्त, संज्ञा शब्दों के अंतिम स्वर के स्थान पर 'आपा', 'इयत', 'ई' आदि प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

जातिवाचक	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	विशेष कथन
बूढ़ा	'आपा'	बुढ़ापा	(आदि स्वर ऊ को उ हो गया है)
आदमी	'इयत'	आदमियत	
इन्सान	,,	इन्सानियत	
चोर	'ई'	चोरी	
ठग	,,	ठगी	
कारीगर	,,	कारीगरी	

(ii) कुछ जातिवाचक संज्ञा शब्दों में 'ता', 'त्व' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

मनुष्य	'ता'	मनुष्यता	
मित्र	,,	मित्रता	
शिशु	,,	शिशुता	
पशु	,,	पशुता	
प्रभु	,,	प्रभुता	
वीर	,,	वीरता	
क्षत्रिय	'त्व'	क्षत्रियत्व	
नारी	,,	नारीत्व	
गुरु	,,	गुरुत्व	
व्यक्ति	,,	व्यक्तित्व	
प्रभु	,,	प्रभुत्व, प्रभुता	
स्त्री	,,	स्त्रीत्व	
हिंदू	,,	हिंदुत्व	(अंतिम स्वर ऊ को उ हो गया है)

(iii) कुछ जातिवाचक संज्ञा शब्दों के अन्तिम स्वर का लोप करके 'य' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

पंडित	'य'	पांडित्य	('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्धि अर्थात 'अ' को 'आ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात 'त्')
कुमार	"	कौमार्य	('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्धि अर्थात 'उ' को 'औ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात 'र्')

(ख) सर्वनाम शब्दों से भाववाचक संज्ञा-निर्माण

कुछ सर्वनाम शब्दों में 'कार', 'त्व' 'पन' आदि प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

सर्वनाम	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
अहं	'कार'	अहंकार
मम	'त्व'	ममत्व, ममता
स्व	"	स्वत्व
निज	"	निजत्व, निजता
अपना	'पन'	अपनापन, अपनत्व

(ग) विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा-निर्माण

(i) कुछ विशेषण शब्दों में अंतिम स्वर के स्थान पर 'आई', 'आपा', 'आस', 'आहट', 'इमा' तथा 'ई' प्रत्यय लगाकर भाववाचक शब्दों का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	विशेष कथन
अच्छा	'आई'	अच्छाई	
गहरा	"	गहराई	
भला	"	भलाई	

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	विशेष कथन
ऊँचा	'आई'	ऊँचाई	
मोटा	'आपा'	मोटापा	
मीठा	'आस'	मिठास	(आदि स्वर ई को इ)
खट्टा	,,	खटास	(ट् का लोप)
कड़वा	'आहट'	कड़वाहट	
चिकना	,,	चिकनाहट	
काला	'इमा'	कालिमा	
नीला	,,	नीलिमा	
महा	,,	महिमा	
ईमानदार	'ई'	ईमानदारी	
चालाक	,,	चालाकी	
कंजूस	,,	कंजूसी	
गरीब	,,	गरीबी	
आज़ाद	,,	आज़ादी	
लाल	,,	लाली	
सफेद	,,	सफेदी	

(ii) कुछ विशेषण शब्दों में 'ता' प्रत्यय लगाकर भाववाचक शब्दों का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं :

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	विशेष कथन
सुन्दर	'ता'	सुन्दरता	
निर्धन	,,	निर्धनता	
मूर्ख	,,	मूर्खता	
सरल	,,	सरलता	

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	विशेष कथन
सज्जन	'ता'	सज्जनता	
विद्वान	,,	विद्वता	('विद्वान' के 'वा' में आए दीर्घ स्वर 'आ' की जगह 'अ' ह्रस्व स्वर हो गया है अर्थात 'वा' को 'व' और साथ ही 'ता' प्रत्यय जुड़ गया है)
मधुर	,,	मधुरता	
चतुर	,,	चतुरता, चातुर्य	

(iii) कुछ विशेषण शब्दों के अन्तिम स्वर का लोप करके 'य' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :

स्वस्थ	'य'	स्वास्थ्य	('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्धि अर्थात 'अ' को 'आ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात अंतिम वर्ण आधा)–
धीर	,,	धैर्य	('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्धि अर्थात 'ई' को 'ऐ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात 'र्') धीरज, धीरता
उचित	,,	औचित्य	('य' प्रत्यय लगने पर आदि स्वर वृद्धि अर्थात 'उ' को 'औ' तथा अंतिम स्वर का लोप अर्थात 'त्')–